अमर उजाला

बरेली
सोमवार, 2 जून 2025

PAGE NO: 05 MIDDLE

'उर्दू है अगर अम्मी, तो हिंदी मेरी खाला है'

बरेली। श्रीराम मूर्ति स्मारक रिद्धिमा में रविवार को मुशायरे की शाम 'बज्म-ए-सुखन' का आयोजन किया गया। इसमें शायरों ने अपने कलाम से जहां इश्क और मुहब्बत की बात की, वहीं अपने शेर में बच्चों की जिम्मेदारियां पूरा करते बूढ़े होते मां-बाप के अनछुई व्यथा का भी जिक्र किया।

इस मौके पर खैराबाद के शायर अफजल यूसुफ ने 'तकदीर ने एक ऐसे घर में पाला है, एक ओर जहां मस्जिद एक ओर शिवाला है' शेर से अपना कलाम पढ़ना शुरू किया। इस कलाम में 'दोनों ही बराबर हैं अफजल की नजर में, उर्दू है अगर अम्मी तो हिंदी मेरी खाला है' से उन्होंने हिंदी और उर्दू के एक होने का भी संदेश दिया। शायर जीशान हैदर ने अपने कलाम 'हद से शायद गुजर गया कोई, मुझपे भी आज

'बज्म-ए-सुखन' की महफिल में रिद्धिमा के मंच पर मौजूद शायर। स्रोत : संस्था

मर गया कोई' पढ़कर महफिल में इश्क और मुहब्बत की फुहार छोड़ी।

आसिफ हुसैन रिजवी उर्फ शायर समीर भाई ने बच्चों को पालने की जिम्मेदारियां पूरी करते करते बुजुर्ग होते मां-बाप की दुश्वारियों का जिक्र किया। उन्होंने इसके लिए प्रोफेसर हुसैन अनसारीयान का कलाम पढ़ कर खूब तालियां बटोरीं। शायरा रिजवाना बी, शायर मोहम्मद मुदस्सर हुसैन उर्फ गुलरेज तुराबी, हाली अब्बास जैदी उर्फ हानी बरेलवी, सज्जाद हैदर ने अपने कलाम पेश किए। इस दौरान एसआरएमएस ट्रस्ट के संस्थापक व चेयरमैन देव मूर्ति, आशा मूर्ति, डा. रजनी अग्रवाल, सुभाष मेहरा, डा. एमएस बुटोला, डा. प्रभाकर गुप्ता, डा. शैलेश सक्सेना मौजूद रहे। संवाद